

373वाँ

सफलतम अंक

वर्ष 32

प्रथम अंक

अगस्त 2009

इस अंक में

प्रतियोगिता दर्पण

हिन्दी मासिक

- | | |
|---|---|
| 9 सम्पादकीय | 98 मानक हिन्दी का व्याकरणिक स्वरूप |
| 11 पाठकों के पत्र | 100 सार संग्रह |
| 13 राष्ट्रीय घटनाक्रम | 103 सामान्य अध्ययन-सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, 2008 |
| 19 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम | 114 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान-(i) उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. कम्बाइन्ड लोअर सबोर्डिनेट (विशेष) प्रा. परीक्षा, 2004 |
| 25 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य | 120 (ii) मध्य प्रदेश संविदा शिक्षक पात्रता (वर्ग-3) परीक्षा, 2008 |
| 29 आर्थिक समीक्षा 2008-09 में अर्थव्यवस्था की स्थिति एवं चुनौतियों का लेखा-जोखा | 125 (iii) छत्तीसगढ़ सहायक जिला अभियोजन अधिकारी परीक्षा, 2008 |
| 33 केन्द्रीय बजट 2009-10 | 131 उद्योग व्यापार जगत् |
| 38 रेल बजट 2009-10 | 133 ऐच्छिक विषय-भूगोल-सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा, 2009 |
| 42 नवीनतम सामान्य ज्ञान | 143 विविध तथ्य-सामान्य जानकारी-भारी उद्योग एवं लोक उद्यम क्षेत्र में प्रगति : पर्यावलोकन |
| 51 खेलकूद | 146 तर्कशक्ति परीक्षा-नाबार्ड बैंक ऑफीसर्स परीक्षा, 2009 |
| 55 रोजगार समाचार | 151 अंकगणित-एस.एस.सी. कर सहायक परीक्षा, 2008 |
| 58 राज्य समाचार | 154 संख्यात्मक अभियोग्यता-केनरा बैंक (पी. ओ.) परीक्षा, 2009 |
| 60 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी | 158 वर्णनात्मक भाषा-इण्डियन ओवरसीज बैंक (पी. ओ.) परीक्षा, 2009 |
| 62 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं | 160 क्या आप जानते हैं ? |
| 69 स्मरणीय तथ्य | 161 अपना ज्ञान बढ़ाइए |
| 71 विश्व परिदृश्य | 162 प्रश्न आपके उत्तर हमारे |
| 73 आर्थिक लेख-(i) वैश्वीकरण और निर्धनता | 163 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा-विशुद्ध राष्ट्रवाद ही राष्ट्र की प्रगति की कुंजी है |
| 76 (ii) मंदी का अर्थशास्त्र | 167 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध-पंथ निरपेक्षता पारम्परिक भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की मुख्य विशेषता है |
| 78 समसामयिक लेख-नित नई ऊँचाइयाँ छूता भारत निर्वाचन आयोग | 170 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-363 का परिणाम |
| 81 समसामयिक आर्थिक लेख-अति उपभोक्तावादी संस्कृति और अमरीकी 'सब-प्राइम' संकट | 171 वार्षिकी |
| 85 सामाजिक लेख-भारत के सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक परिवेश में दलित | |
| 89 ऐतिहासिक लेख-कश्मीर समस्या : ऐतिहासिक संदर्भ | |
| 95 सूचना प्रौद्योगिकी लेख-सूचना प्रौद्योगिकी : प्रशासनिक एवं अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव | |

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

चाह के लिए राह बनाइए

जीवन का निर्माण तीन शक्तियों अथवा वृत्तियों द्वारा होता है—इच्छा (चाह), विचार और क्रिया. हमारे मन में किसी कार्य को सम्पन्न करने की, किसी वस्तु को प्राप्त करने की अथवा किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की इच्छा अथवा चाह उत्पन्न होती है. विचारशक्ति द्वारा हम अपने लक्ष्य अथवा प्राप्तव्य को प्राप्त करने की योजना बनाते हैं और अपनी क्रिया शक्ति द्वारा उस योजना को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करते हैं. इस त्रिविधि प्रक्रिया द्वारा विश्व के समस्त कार्यकलाप संचालित होते रहते हैं. समस्त कार्यकलापों एवं गतिविधियों के मूल में प्रेरक शक्ति के रूप में हमारी इच्छा-शक्ति स्थित रहती है.

एक बार एक राज्य में वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ गया. राजा दयालु एवं प्रजावत्सल था. उसने अपने भण्डार में एकत्र खाद्य सामग्री को निःशुल्क वितरित कराना आरम्भ कर दिया.

एक किसान ने सोचा—क्या वर्षा के अभाव में खेती करना सम्भव हो सकता है ? उसने निःशुल्क अन्न लेना अस्वीकार कर दिया और राज्य की सीमा में स्थित एक तालाब से पानी ला-लाकर खेत को सिंचना आरम्भ कर दिया. कुछ दिनों में तालाब का पानी समाप्त हो गया. किसान हताश नहीं हुआ. उसने नदी से पानी लाकर खेत की सिंचाई करने की योजना बनाई. उसके कार्य में पूरा परिवार तो सहयोगी था ही.

तीन दिन तक किसान और उसके परिवारीजन नदी से पानी भरकर लाते रहे. संयोग की बात रात में वर्षा हो गई.

राजा ने किसान को बुलवाया, उसकी प्रशंसा की और उसको पुरस्कृत करते हुए कहा—किसी ने ठीक ही कहा है—जहाँ चाह है, वहाँ राह है. परमात्मा ने हमको इच्छा-शक्ति का वरदान दिया है. फलतः हम स्वतन्त्र रूप से निर्णय करने के लिए तथा इच्छित रूप में पुरुषार्थ करने के लिए स्वतन्त्र हैं. प्रकृति भी चाहती है कि हम प्रत्येक अवसर पर, विशेषकर किसी समस्या के उपस्थित होने पर, अपनी इच्छा शक्ति की सहायता से अपना मार्ग निर्धारित करने का अभ्यास करें.

दक्षिण अफ्रीका में निवास करते हुए एक दिन मोहनदास कर्मचन्द गांधी को एक गोरे व्यक्ति के हाथों अपमानित होना पड़ा था, क्योंकि वह एक गुलाम देश के निवासी थे. बस, उसी क्षण उन्होंने यह तय कर लिया था कि मैं अपने देश को स्वतन्त्र करने का प्रयत्न करूँगा और अपने मस्तक पर लगे हुए गुलामी के कलंक को मिटाकर रहूँगा.